विपश्यना पत्रिका संग्रह

वर्ष १९ से वर्ष २१ (जुलाई १९८९ से जून १९९२ तक)

भाग-७

विपश्यना विशोधन विन्यास

विपश्यना

पत्रिका संग्रह

भाग - ७

वर्ष १९ से वर्ष २१

(जुलाई १९८९ से जून १९९२ तक)

विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्का तथा अन्य साधकों के विपश्यना पत्रिका में प्रकाशित लेखों का संग्रह

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

H90 - विपश्यना पत्रिका संग्रह भाग - ७

© विपश्यना विशोधन विन्यास
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करणः जुलाई २०१६

मूल्यः रु. १००.००

ISBN 978-81-7414-389-1

प्रकाशकः
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२ ४०३
जिला- नाशिक, महाराष्ट्र
फोनः ०२५५३-२४४९९८, २४४०७६,
२४४०८६,२४४१४४, २४४४४०
Email: vri_admin@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org

मुद्रकः
अपोलो प्रिंटिंग प्रेस
जी-२५९, सीकॉफ लिमिटेड, ६९ एम. आय. डी. सी.,
सातपुर, नाशिक-४२२००७, महाराष्ट्र

विपश्यना पत्रिका संग्रह भाग - ७

विषयानुक्रमणिका

(जुलाई १९८९ से जून १९९० तक)

धर्म प्रसार सम्मेलन..... ९

धम्मगिरि (१ से ५ मार्च, १९८९)..... ९

विपश्यना मेरी आध्यात्मिक यात्रा *(मोहम्मद आरिफ जोइया)* ११

अभिलाषाएं पूर्ण हुई.....१८

सत्य वचन का फलः फूलों का उपहार (*पुष्पा सावला*).....२३

मगध का भाग्य जागा.....२५

सतयुग की चर्चा (१) (*पूर्णिमा पकवासा, संपादिका 'शक्तिदल'*) २९

रूप गर्विता खेमा.....३४

मरा तो रोना क्या (*डॉ. ओमप्रकाश*).....४०

खेमा की बुद्धवंदना.....४२

सतयुग की चर्चा (२) (*पूर्णिमा पकवासा, संपादिका 'शक्तिदल'*) ४५

सही बुद्धवंदना.....५०

सतयुग की चर्चा (३) (*पूर्णिमा पकवासा, संपादिका 'शक्तिदल'*) ५२

धन्य धर्म.....५६

मिटाओ मेरे भय आवागमन के (*डॉ. ओमप्रकाश*).....५८

सतयुग की चर्चा (४) (*पूर्णिमा पकवासा, संपादिका 'शक्तिदल'*) ६०

अनमोल भेंट.....६६

शैतान से साधु (*डॉ सावित्री व्यास*).....६९

संवेदना (१०).....७३

विपश्यना से मेरा जीवन ही बदल गया
(*अनागारिका सरण सीला, काठमाण्डू, नेपाल*) ७६

सवेदना (११) ७९
भेड़ा हँसा भी, और रोया भी। (जातक कथा) (*सौ. पुष्पा सावला*) .. ८३
विलुप्त संपदा ८६
हर्ष-संवाद ८९
सुखी-सुरक्षित कौन? ९२

(जुलाई १९९० से जून १९९१ तक)

निंदा हो या प्रशंसा ९९
वाणी कल्याणी १०५
सुप्पटिवेधन ११०
स्थायी पीड़ा का उपचार और विपश्यना साधना
(*ले. डॉ. जार्ज पोलैंड-क्यूबेक, कनाडा*) ११३
एक और प्रश्न ११७
संवेदना-विपश्यना भावना (*डॉ. ओम प्रकाश*) १२०
अभय अभय हुआ १२५
पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन के २०वें पुण्य दिवस पर १३०
ऐसे थे सयाजी ऊ बा खिन १३०
अनुलोम धारा की रिश्वत भी नहीं १३४
वीतशोक, सचमुच वीतशोक हुआ १३७
प्राकृतिक चिकित्सा तन का और विपश्यना मन का शोधन करती है
(*सहायक आचार्य डॉ. विट्ठलदास मोदी*) १४०
देख देह की गंदगी १४४
अभया भव-भय से छुटी १४९
पुक्कुसाति (१) १५१
धरम रतन उपहार १५१
पुक्कुसाति (२) १५८
चला त्यागकर राज्य-सुख १५८
पुक्कुसाति (३) १६५
हुई मित्रता फलवती १६५

(जुलाई १९९१ से जून १९९२ तक)

राजकुमार सीलवा १७३

विपश्यना विधि से कुछ आयुर्वेदीय ग्रन्थ-वचनों पर प्रकाश
(वैद्य अ. वि. बाक्रे, प्राध्यापक, शरीर क्रिया विज्ञान,) १७६

विपश्यना और दर्द-निवारण
(बी. के. बिन्जू, आई. ए. एस. निवृत्त, जयपुर) १७९

उत्कृष्ट मंगल धर्म १८१

अहिंसा, संयम और तप १८१

आत्म कथन - १ ..... १८७

ऐसे थे गुरुदेव १८७

उच्च सैद्धान्तिक जीवन १८७

आत्म कथन - २ ..... १९०

ऐसे थे गुरुदेव अपने सिद्धांतों पर अविचल १९०

आत्म कथन - ३ ..... १९२

विपश्यना जीवन में उतरे १९२

आत्म कथन - ४ ..... १९३

जब आधार ही गलत हो १९३

आत्म कथन - ५ ..... १९५

वे सदा साथ रहते हैं १९५

गुरुदेव के पत्रों में से १९७

आत्म कथन - ६ ..... १९९

कैसे सज्जन लोग : ऊ छां ठुन १९९

आत्म कथन - ७ ..... २०१

कैसे सज्जन लोग : डो म्या सैं २०१

ऐसे थे गुरुदेव २०५

कमल से कोमलः कुलिश कठोर २०५

ऐसा ही एक अन्य प्रसंग २०६

उनमें से एक २०७

मनुआ काहे गुमान करे २०८
ऐसे थे गुरुदेव २१२
शुद्ध धर्म की शिक्षा..... २१२
गुरुदेव के सांप्रदायिकताविहीन प्रशिक्षण का एक उदाहरण २१३
इसी प्रकार की एक और घटना..... २१३
'चैत्य' ध्यान-साधना के लिये २१५
ऐसे थे गुरुदेव २१७
मैं जा रहा हूं, धर्म जा रहा है २१७
सचमुच रत्न ही तो लाया २१८
ऐसे थे गुरुदेव २२०
विवाद से दूर २२०
ऐसे थे गुरुदेव २२६
अद्भुत प्रशिक्षण..... २२६
अद्भुत परीक्षण २२८
ऐसी ही एक और घटना २३०
संबुद्ध चारिका २३४
स्वप्न पूरे हुए..... २३४
कैसे सज्जन लोग २४०
बर्मा का भिक्षुसंघ २४०
भिक्षु उत्तम २४१
भदन्त विचित्तसाराभिवंस २४१
भिक्षु ऊ थिथिला २४६
भिक्षु ऊ जनकाभिवंस २४६